पाठ - 1

''अनजान ईश्वर''

प्रार्थना : हे ईश्वर, आप ही हमारे शिक्षक रहिए। और हमारी मदद कीजिए ताकि हम यह जान पाएँ कि आप ही एकमात्र सच्चे परमेश्वर हैं। हमारी सहायता करें कि हम स्वयं को, एवं अपनी निर्बलताओं को भी जान सकें। अपनी आत्मा के द्वारा हमें चलाइएगा। हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह में विद्यमान आपकी सहायता एवं आपके सत्य को हमें दर्शाइएगा, ताकि जिससे आज और सदाकाल आपके ही संग हम जीवित रहने पाएँ। आमीन!

पाठ

प्रेरित पौलुस परमेश्वर का दूत है। पौलुस ने सच्चे ईश्वर को जाना। परमेश्वर ने ही अपने वचन में पौलुस पर स्वयं को प्रगट किया। और उसी सच्चे परमेश्वर के बारे में बताने को यह पौलुस अनेकों प्रान्तों में यात्राएँ किया।

इन्ही यात्राओं के दौरान एक बार वह एथेन्स शहर में आया। एथेंसवासी अत्यंत ही ज्ञानवान थे। एवं ईश्वर भक्त भी। वे विभिन्न प्रकार के देवी देवताओं के माननेवाले लोग थे। इन विभिन्न देवीदेवताओं के लिए उन्होने कई वेदियों एवं मन्दिरों को बनवाया तो था, किंतु उन्हे पक्के तौर पर यह नहीं पता था कि 'सच्चा ईश्वर' कौन है! उन के वेदियों में से एक वेदी पर पौलूस ने ''अनजान ईश्वर के लिए'' लिखा हुआ पाया तब इसी वेदी के पास खड़े रहकर वह एथेंसवासियों को उपदेश देने लगा। उन के इसी 'अनजान ईश्वर' के बारे में उसने उन्हे बताया। उस ने कहा कि उन के लिए जो यह ईश्वर 'अनजान' है वही सच्चा परमेश्वर है, और उसी ने सब कुछ की सृष्टि करके सभों को जीवन दिया है, और जो यह चाहता है कि सभी मनुष्यों का उद्धार हो। एवं जो यह भी चाहता है कि सारे लोग सदा उस के संग जीवित रहें। इसी वजह से उस परमेश्वर ने इस संसार में एक उद्धारकर्ता को भेजा, जो सब लोगों के लिए पाप एवं मृत्यु पर जय पाया। यह उद्धारकर्ता सभों का न्याय करने को दोबारा लौट आएगा। अत: परमेश्वर यही चाहता है कि सारे मनुष्य अपने पापों का पश्चाताप करके, इस उद्धारकर्ता पर विश्वास करते हुए, स्वर्ग में उस के संग अनंत जीवन जीएँ। उद्धारकर्ता यीशु मसीह के विषय में हमें बतानेवाले पवित्रशास्त्र के लेखों को उसने हमें भी दिया। अत: जब कभी हम एकत्रित होते हैं हर बार हम यह चाहते हैं कि इस 'उद्धारकर्ता ईश्वर' के बारे में हम आपको बताएँ (प्रेरितो के कामो 17:16-34)।

आज भी अनेकों लोग यह विश्वास करते हैं कि 'ईश्वर है।' उन के आस-पास विद्यमान प्रकृति एवं सृष्टि को देखकर वे ऐसा मानते हैं। जैसे कि, किसी भी एक मकान को देखकर हम यह नहीं कह सकते, कि वह मकान अपने आप बन गया। अर्थात कि उस मकान का कोई न कोई बनानेवाला अवश्य ही होता है। ठीक ऐसे ही, इस संसार में नदी, नालों, पहाड़ों एवं वृक्षों को देखने पर आस्तिक लोग यह जान लेते हैं कि ये सब अपने आप ही नहीं बने हैं। अत: निश्चय ही इन सब को बनानेवाला कोई एक ईश्वर अवश्य है (इब्रानियों 3:4)। आकाशमण्डल एवं उस में के करोड़ों ग्रह, तारे हमें यही बताते हैं कि महान शक्तिशाली, सामर्थी एवं ज्ञानवान ईश्वर अवश्य ही उपस्थित है (भजन सहिता19:1)

सृष्टि के इसी गवाही एवं सबूतों के कारण ही बाइबल यह साबित करने का यत्न नहीं करती कि परमेश्वर है या नहीं। बजाय इसके, बाइबल इस सत्य को स्वीकारती है कि सब कुछ को सृजनेवाला ईश्वर अवश्य ही मौजूद है। केवल मूर्ख ही इस सत्य को नकारता है (भजन सहिता 14:1)। मनुष्य में एक ऐसी आवाज छिपी है (अर्थात् अंतरात्मा) जो उसे अंदर ही अंदर यह बताती है कि 'ईश्वर है'। जिसे हम 'विवेक' भी कहा करते हैं। यही विवेक उस मनुष्य को यह भी बताता है कि बुरे काम करना गलत या पाप है। अत: चोरी, झूठ बोलना एवं व्यभिचार पाप है। 'ऐसे ऐसे काम करने से हम दण्ड पाएँगे' हमारा विवेक हमें बताता है कि, मनुष्य के मन में लिखे हुए 'व्यवस्था का प्रमाण' या 'गवाही' यही आवाज है। किंतु पाप की वजह से अंतरात्मा की यह आवाज स्पष्ट एवं पूर्ण नहीं है। तौभी पापियों के मन में यह आवाज सदा गूँजती ही रहती है (रोमियों 2:15)।

'प्राकृतिक जगत' एवं 'मनुष्य का विवेक' यद्यपि ईश्वर के अस्तित्व की सकारात्मक गवाही देते तो हैं तौभी ये दोनों ही हमें यह नहीं बता पाते कि सच्चा ईश्वर कौन है। अन्यजातियों के द्वारा पूजे जानेवाले कई देवी देवताओं एवं मूर्तियों के संबंध में यह बात स्पष्टत: हम देख पाते हैं।

कुछ लोग काठ (लकड़ी) से या पत्थरों से अपने लिए मूर्तियाँ बनाते हैं। वहीं कुछ लोग सूरज, चंद्रमा या तारागणों को भी पूजते हैं (भजन सहिता 86:5)। यूनान के रहनेवाले, जिनके पास पौलुस गया था, स्पष्टत से नहीं जानते थे कि सच्चा ईश्वर कौन है। अत: इसीलिए उन्होने एक वेदी भी बनायी थी जिस पर लिखा था – ''अनजान ईश्वर के लिए।''

अपने विषय में हमें बताने के लिए ही परमेश्वर ने बाइबल के रूप में हमें अपना 'वचन' दिया। परमेश्वर ने मूसा से बातें कीं – (निर्गमन 25:1)। उस ने अपना वचन अपने भविष्यवाकताओ के मुँह में रख दिया– (यिर्मयाह 1:9)। ''यहोवा यों कहता है'' – यह वाक्य 'पुराना नियम' में लगभग 2000 बार पाया जाता है। परमेश्वर के वचन को यीशु ने खराई से बोला (यूहन्ना 17:17) और यीशु के विषय में गवाही देने के लिए परमेश्वर ने 'नया नियम' के लेखकों को बल एवं सामर्थ्य दिया।

उपसंहार

तुम जानते हो कि 'ईश्वर है।' इस सच्चाई को, अपने आसपास होनेवाले परमेश्वर के ही कार्यों से तुम देख पा रहे हो। और तुम्हारा विवेक भी तुम्हे यही बताता है। किंतु तुम्हारे पाप से तुम्हे छुड़ानेवाले सच्चे परमेश्वर के बारे में तुम्हे आवश्यक सारी बातें यह प्रकृति या सृष्टि या तुम्हारा विवेक तुम्हे नहीं बता सकते। वरन् वो सारी बातें तो स्वयं परमेश्वर ही अपने बाइबल में तुम्हे बताता है। अत: हम चाहेंगे कि अपने उसी सच्चे परमेश्वर के विषय में हम और भी अधिक जानें एवं सीखें, जिसने हमारे पापों से हमें छुड़ाने हेतु अपने ही एकलौते पुत्र को हमारे लिए देने की हद तक हम से प्रेम किया।

अभ्यास

अ. प्रश्नोत्तर :

प्र.1. क्या अधिकांश लोग यह विश्वास करते हैं कि 'परमेश्वर है'?

भजन संहिता 14:1 – मूर्ख ने अपने मन में कहा – ''कोई परमेश्वर है ही नहीं।''

उ. हाँ, अधिकांश लोग यह विश्वास करते हैं कि 'परमेश्वर है।' किन्तु केवल मूर्ख व्यक्ति ही विश्वास नहीं करते।

प्र.2. लोग कैसे यह जान पाते हैं कि 'परमेश्वर है'?

इब्रानियों 3:4 – क्योंकि हर एक घर का कोई न कोई बनानेवाला होता है, पर जिस ने सब कुछ बनाया वह परमेश्वर है।

भजन संहिता 19:1 – आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है।

उ. इस कुदरत में अर्थात् प्राकृतिक जगत में, एवं परमेश्वर के द्वारा सृजी हुई विभिन्न वस्तुओं में वे उस के कार्यों को देखकर जाना करते हैं कि 'वह है'।

प्र.3. मनुष्य के अंदर की कौन सी आवाज उसे यह बताती है कि 'परमेश्वर है'?

रोमियों 2:15 – उन के विवेक भी गवाही देते हैं।

उ. मनुष्य का विवेक यानी उस के अंतरात्मा की आवाज ही उसे यह बताती है कि 'हाँ, परमेश्वर है'।

प्र.4. इस प्रकृति में विद्यमान परमेश्वर के कार्यों को देखकर क्या मनुष्य यह जान पाता है कि सच्चा परमेश्वर कौन है ?

भजन संहिता 96:5 – क्योंकि देश देश के सब देवता तो मूरते ही हैं; परन्तु यहोवा ही ने स्वर्ग को बनाया है।

उ. नहीं, प्रकृति हमें नहीं बताती कि सच्चा परमेश्वर कौन है।

प्र.5. क्या मनुष्य का विवेक उसे यह बताता है कि सच्चा परमेश्वर कौन है ?

प्रेरितों 17:23अ – ''क्योंकि मैं फिरते हुए जब तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक ऐसी वेदी भी पाई, जिस पर लिखा था, 'अनजाने ईश्वर के लिए'।''

उ. नहीं, मनुष्य का विवेक उसे यह नहीं बताता, कि सच्चा परमेश्वर कौन है।

प्र.6. तो फिर 'उस के' विषय में हमें सच्चाई बताने हेतु परमेश्वर ने हमें क्या दिया ?

निर्गमन 25:1 – यहोवा ने मूसा से कहा – ''इस्राएलियों से यह कहना कि...।''

यिर्मयाह 1:9 – तब यहोवा ने हाथ बढ़ाकर मेरे मुँह को छुआ; और यहोवा ने मुझ से कहा, 'देख, मैं ने अपने वचन तेरे मुँह में डाल दिए हैं।'

यूहन्ना 17:17 – सत्य के द्वारा उन्हे पवित्र कर, तेरा वचन सत्य है।

उ. परमेश्वर ने अपने पवित्र शास्त्र 'बाइबल' में अपना वचन हमें दिया है।

ब. वैकल्पिक प्रश्न – निम्नलिखित वाक्यों के सही उत्तर चुनिए –

1. पौलुस जिस शहर में गया, वह था –
   ( ) यरूशलेम
   ( ) एथेन्स
   ( ) रोम
2. निम्न बातें लिखी हुई वेदी उसने पायी –
   ( ) अनजाने ईश्वर के लिए।
   ( ) त्रिएक ईश्वर के लिए।
3. एथेन्स के लोगों का यह विश्वास था कि –
   ( ) कोई परमेश्वर है ही नहीं।
   ( ) त्रिएक परमेश्वर विद्यमान है।
   ( ) अनेक ईश्वर हैं।

स. पाठ को लागू करना

निम्न लिखित वाक्यों में से सही वाक्यों को पहिचानिए –

1. मनुष्य के पास कोई ऐसा साधन या मार्ग नहीं जिस से वह यह जान सके कि 'परमेश्वर है।' ( )
2. तारे हमें बताते हैं कि 'परमेश्वर है।' ( )

3. हमारा विवेक हमें बता देता है कि 'परमेश्वर है।' ( )

4. बाइबल के बगैर भी हम सच्चे परमेश्वर को जान सकते हैं। ( )

5. बाइबल हमें बताती है कि सच्चा परमेश्वर कौन है। ( )

द. पवित्रशास्त्र में से खोजना

निम्न लिखित आयतों में से उस आयत को पहिचानिए जो हमें यह बताती है कि – 'इस सृष्टि के आधार पर मनुष्य जिन को ईश्वर जाना करता है वे सब केवल झूठे ईश्वर ही होते हैं।'

भजन सहिता 14:1 भजन सहिता19:1 भजन सहिता 96:5 यूहन्ना 17:17

इ. कँठस्थ वाक्य –

निम्न आयत को मुखाग्र कीजिए –

यूहन्ना 3:16 – ''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।''

– – – –

पाठ - 2

परमेश्वर का वचन

प्रार्थना : हे परमेश्वर, हमारे मनों एवं कानों को खोलिएगा, ताकि हम आप का वचन सीखने पाएँ। आपके वे सामर्थ्यपूर्ण एवं पवित्र वचन हमें सिखाइये, जो उद्धार पाने के लिए हमें बुद्धिमान बना सकते हैं। आपके आत्मा की अगुवाई में हमें चलाइएगा, ताकि हम यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता स्वीकारने पाएँ। हमारे स्वर्गीय घर की ओर हमें चला ले जाने में आप का वही वचन हमारे पावों के लिए दीपक एवं हमारे मार्ग के लिए उजियाला होवे। आमीन।

पाठ

'फिलिप्पुस' आदिम मसीही मिशनरियों (प्रचारकों) में से एक था। परमेश्वर ने उस से कहा कि वह यरूशलेम शहर के दक्षिण दिशा में स्थित एक प्रान्त को जाए। परमेश्वर के कहे अनुसार ही फिलिप्पुस वहाँ गया, जहाँ उसने कूश देश के एक मनुष्य को पाया, जो पवित्रशास्त्र में से यशायाह नबी की पुस्तक पढ़ रहा था। तब फिलिप्पुस ने उस से पूछा ''तू जो पढ़ रहा है क्या उसे समझता भी है?'' उसने कहा - ''जब तक कोई मुझे न समझाए तो मैं कैसे समझूँ?''! तब फिलिप्पुस ने उसे 'पुराने नियम' के लेखों को समझाया। और उस कूश देशवासी को यह भी बताया कि उद्धारकर्ता के दु:खों एवं मृत्यु के विषय में पहले ही से उन्हे किस रीति से बता दिया गया था। और उसे दर्शाया, कि पवित्रशास्त्र के वो सारे लेख यीशु मसीह के कार्यों से कैसे पूरे हुए। मसीह के बारे में उसे बतायी गयी सच्चाई पर उस खोजे ने विश्वास करके फिलिप्पुस से विनती की कि वह उसे बपतिस्मा दे। फिलिप्पुस उसे बपतिस्मा देकर, अपनी राह चला गया। और परमेश्वर के वचन की सच्चाई को चूँकि फिलिप्पुस ने उसे समझाया, इसलिए वह खोजा अत्यंत आनंदित हुआ (प्रेरितों के काम 8:26-40)।

'पवित्र शास्त्र' परमेश्वर का वचन ही है। पहले पहल तो 'पुराना नियम' के विषय में यह सच है। इसलिए कि मूसा से या पुराना नियम के विभिन्न भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा परमेश्वर ने लोगों से कैसे बातें की - यह हम पिछले पाठ में बता चुके हैं। और स्वयं यीशु ने भी यही गवाही दी कि 'पुराना नियम' परमेश्वर का वचन है। और वैसे ही यीशु के बाद के 'नया नियम' के सब लेखकों ने भी केवल परमेश्वर के वचनों को ही लिखा! उदाहरण के तौर पर - प्रेरित पौलुस अक्सर अपने लेखों में यह बताता है कि 'उसका वचन परमेश्वर का वचन है' - (1 थिस्सलुनिकियो 2:13)।

इसीलिए, यद्यपि पुराना और नया नियम दोनों ही मनुष्यों के द्वारा लिखे गए हैं तौभी वे परमेश्वर का वचन ही हैं। जिस के सब लेखक परमेश्वर के ही ठहराए हुए हैं - (1 पतरस 1:21)। पुराना नियम में 39 एवं नया नियम में हम 27 पुस्तकों को पाते हैं। आदि काल में परमेश्वर के प्रजा की भाषा 'इब्रानी' में पुराना नियम लिखा गया। किंतु मसीह के काल के पश्चात् नया नियम उस समय की विश्वभाषा यूनानी में लिखा गया। अत: हमारे पास आज पवित्र शास्त्र की अनुवादित प्रतियाँ ही हैं। लगभग हजार से भी ज्यादा प्रादेशिक भाषाओं में बाइबल का अनुवाद अब तक किया जा चुका है।

किंतु आप कहेंगे - ''मनुष्यों के द्वारा लिखा गया यह ग्रन्थ परमेश्वर का वचन कैसे हो सकता है?'' - संपूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है (2 तीमुथियुस 3:16)। प्रेरणा यानी श्वास फूँकना। अर्थात पवित्राशास्त्र की किताबों के लेखकों में परमेश्वर ने अपनी बातों एवं अपने विचारों को डाल दिया। इसीलिए हम यह विश्वास करते हैं कि बाइबल में लिखित हर एक बात पूर्णतया सत्य है एवं उस में कोई तृटि नहीं है (यूहन्ना 17:17)। किंतु कई एक बार लोगों को इस बात का आश्चर्य होता है कि ''तो फिर सर्वभौमिक कलीसिया के सभी शाखाओं के लोग एक ही प्रकार की शिक्षा क्यों नहीं देते?'' इस का मुख्य कारण यह है कि आज विद्यमान हर एक स्थानीय कलीसिया यह विश्वास नहीं करती कि बाइबल के सारे वचन परमेश्वर के ही वचन हैं। हो सकता है कि बाइबल के कुछ एक भागों को वे मान लेते हों किंतु वहीं, उन के अपने विचारों से मेल न खानेवाले वचनों को वे नकार दिया करते हों। शायद वे यहाँ तक कहते हों कि ''बाइबल मे'' परमेश्वर का वचन है।

अत: परमेश्वर ने हमें बाइबल क्यों दिया? उस का मुख्य उद्धेश्य क्या है? किसी एक ऐतिहासिक किताब या 'कथा पुस्तक' की तरह, मात्र पढ़ने में ही क्या यह एक दिलचस्प ग्रन्थ है? पौलुस ने अपने मित्र तीमुथियुस को लिख बताया कि 'यह तो उद्धार पानेवालों के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है' - (2 तीमुथियुस 3:15)। इस संसार की बातों में यह हमें ज्ञानवान नहीं बनाती। यह हमें बताती है कि परमेश्वर के संग सदा जीवित रहने के लिए 'मसीह पर विश्वास के जरिये से' हम कैसे बचाए जाते हैं। यीशु ने हम से जो कहा वह हम करेंगे। अनंत जीवन से संबंधित परमेश्वर के उपदेश को ढूँढ़ पाने के लिए हम इसका अध्ययन करते हैं - (यूहन्ना 5:39)!

उपसंहार

'लूथरन कलीसिया' चारों ही ओर से (हर पहलू से) बाइबल की सत्य शिक्षा पर ही स्थिर है। यह कलीसिया अपने उपदेशों को मनुष्यों के ज्ञान में नहीं खोजती। यह तो केवल परमेश्वर के वचन की सच्चाई की, एवं मात्र इस बात की ही शिक्षा दिया करती है कि वह सच्चाई उद्धारकर्ता यीशु मसीह में ही किस प्रकार से केन्द्रित है। अत: लूथरन कलीसिया आप से यही चाहती है कि आप के आत्मा के अनंत उद्धार के निमित्त परमेश्वर की योजना एवं उद्धेश्य को आप जानें।

अभ्यास

अ. प्रश्नोत्तर

प्र.7. 'बाइबल' क्या है?

निर्गमन 5:1 - ''इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है।''

1 थिस्सलुनीकियों 2:13 - ''जब हमारे द्वारा परमेश्वर के सुसमाचार का वचन तुम्हारे पास पहुँचा, तो तुमने उसे मनुष्यों का नहीं, परन्तु परमेश्वर का वचन समझकर (और सचमुच यह ऐसा ही है) ग्रहण किया।''

उ. 'बाइबल' परमेश्वर का वचन है।

प्र.8. 'बाइबल' को किसने लिखा?

2 पतरस 1:21 - क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।

उ. परमेश्वर के पवित्र भक्त जनों द्वारा बाइबल लिखी गयी।

प्र.9. परमेश्वर ने इन पवित्र लेखकों तक अपना वचन कैसे पहुँचाया?

2 तीमुथियुस 3:16 - संपूर्ण पवित्रशास्त्र (अर्थात बाइबल) परमेश्वर की प्रेरणा से ही रचा गया है।

उ. अत: बाइबल के लेखकों को स्वयं परमेश्वर ने ही उभारा। और जिन बातों या वचनों को उन्हे लिखना था उन बातों को पवित्र आत्मा ने उन में फूँक दिया (अर्थात उन के मन-मस्तिष्क में डाल दिया)।

प्र.10. क्या 'बाइबल' में कुछ तृटियाँ हैं?

यूहन्ना 17:17 - यीशु ने कहा - ''तेरा वचन सत्य है''

उ. नहीं, बाइबल का हर एक वचन पूर्णतया सत्य है।

प्र.11. परमेश्वर ने हमें बाइबल क्यों दिया?

2 तीमुथियुस 3:15 – ''और बचपन से पवित्रशास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान बना सकता है।

उ. परमेश्वर ने हमें बाइबल दिया ताकि हमें यह दर्शाए, कि हम अनंतता के लिए कैसे बचाए जा सकते हैं। (अर्थता कैसे उद्धार पा सकते हैं)

प्र.12. बाइबल का उपयोग हमें कैसे करना चाहिए?

यूहन्ना 5:39 – यीशु ने कहा – ''तुम पवित्र शास्त्र में ढूँढ़ते हो और समझते हो कि उस में अनंत जीवन तुम्हे मिलता है। और यह वही है जो मेरी गवाही देता है।''

उ. अनंत जीवन से संबंधित परमेश्वर के सन्देश को पाने के लिए हमें सावधानीपूर्वक गहराई से बाइबल में से ढूढना (या खोजना) चाहिए।

ब. पाठ को जानना : (प्रेरितों 8:26-40)

निम्नलिखित में से सही विकल्प पहचानिए –

1. फिलिप्पुस किस देशवासी से मिला?
   - ( ) कूश
   - ( ) यूरोप
   - ( ) अमरीका
2. जिस व्यक्ति से फिलिप्पुस मिला, वह व्यक्ति पढ़ रहा था –
   - ( ) नया नियम
   - ( ) यशायाह नबी की पुस्तक
   - ( ) मूसा की किताबें
3. जब फिलिप्पुस ने पवित्रशास्त्र के लेखों में से उसे समझाया , तब वह व्यक्ति –
   - ( ) फिलिप्पुस पर क्रोधित हुआ।
   - ( ) दु:खी होकर लौट गया।
   - ( ) विश्वास करके बपतिस्मा पाया।

स. पाठ को लागू करना

निम्नलिखित में से सही वाक्यों को पहिचानिए –

1. बाइबल 'में' परमेश्वर का वचन है। ( )
2. बाइबल 'ही' परमेश्वर का वचन है। ( )
3. बाइबल में कुछ तृटियाँ भी हैं। ( )
4. बाइबल का हर एक वचन सत्य है। ( )

5. हमें अपनी बाइबल को सावधानी से पढ़ना चाहिए। ( )

6. हमें बाइबल नहीं पढ़ना चाहिए क्योंकि यह समझने में अत्यंत ही कठिन है। ( )

द. पवित्रशास्त्र में से खोजना :

निम्न में से हमारे पाठ के उस आयत को रेखांकित कीजिए (अर्थात आयत के नीचे रेखा खींचिए) जो हमें यह बताती है कि – 'पवित्र आत्मा ने ही पवित्र लेखकों को यह बताया कि उन्हे क्या लिखना है।'

2 पतरस 1:21 यूहन्ना 17:7 2 तीमुथियुस 3:15

इ. कंठस्थ विषय-वस्तु :

निम्न को मुखाग्र कीजिए –

पुराना नियम की पुस्तकें

उत्पत्ति	राजाओं का वृत्तांत (1 और 2)	श्रेष्ठगीत	ओबद्याह
निर्गमन	इतिहास की पुस्तकें (1 और 2)	यशायाह	योना
लैव्यव्यवस्था	एज्रा	यिर्मयाह	मीका
गिनती	नहेम्याह	विलापगीत	नहूम
व्यवस्था विवरण	एस्तेर	यहेजकेल	हबक्कूक
यहोशू	अय्यूब	दानिय्येल	सपन्याह
न्यायियों	भजन संहिता	होशे	हाग्गै
रूत	नीतिवचन	योएल	जकर्याह
शमूएल की पुस्तकें (1 और 2)	सभोपदेशक	आमोस	मलाकी

पाठ - 3

केवल सच्चा परमेश्वर

प्रार्थना : हे परमेश्वर हम आप को धन्यवाद देते हैं, कि आपने अपने ही वचन में स्वयं को हम पर प्रगट किया। हमें बच्चों सा मन दीजिएगा, ताकि हम केवल आप पर ही विश्वास करते हुए, आप के वचनों पर भरोसा रख सकें। पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा कहलानेवाले 'एक सच्चे परमेश्वर' आप ही की हम सदा स्तुति करने पाये। आमीन।

पाठ

काफी लम्बे समय पूर्व एक शक्तिशाली अधिकारी हुआ करता था। वह अनेकानेक लोगों पर, भूमि पर एवं पशुसम्पदा पर शासन किया करता था। किंतु वह अधिकारी मन ही मन दु:खी रहा करता था। उस की यह चाह थी कि वह परमेश्वर के बारे में अधिकाई से जान सके। वह एक ज्ञानी व्यक्ति को जानता था। एक दिन इस अधिकारी ने उस ज्ञानी से पूछा कि 'परमेश्वर' याने क्या होता है या कौन है! तब उसने काफी देर सोचने के बाद कहा - 'इस विषय पर सोचने विचारने के लिए मुझे एक दिन का समय चाहिए, तब फिर मैं तुम्हे इसका जवाब दूँगा।' किंतु दोबारा जब वह आया, उसने फिर यों कहा - 'कृपया मुझे दो और दिन दिन का वक्त दीजिए, ताकि मैं आप को जवाब बता पाऊँ।'' पर दो, दिन बीत जाने के बावजूद भी उसे जवाब न मिल सका। और फिर वह ज्ञानी आकर उस अधिकारी से चार और दिनों की मोहलत माँगने लगा। ऐसा करते करते बहुत दिन बिता दिए उसने! हर बार वह कुछ और दिनों का अवसर माँगने लगा तौभी वह जवाब न ला सका। अंतत: वह अधिकारी धीरज खो बैठा और गुस्सैला होकर उस से पूछा ''मुझे अब तक जवाब तुमने क्यों नहीं दिया?'' तब फिर आखिरकार उस ज्ञानी ने, यह मानते हुए कि कितना विचारने पर भी उसे जवाब नहीं मिल पा रहा, कहा - ''परमेश्वर याने क्या होता है मुझे नहीं मालूम।''

हाँ, ऐसे ही, आज तलक इस संसार का कोई भी महानतम ज्ञानी भी इस प्रश्न का जवाब न बता सका। इस का वास्तविक जवाब तो हम केवल बाइबल में ही पाते हैं। कि बाइबल में परमेश्वर के द्वारा स्वयं अपने ही बारे में बताया गया जवाब हमें मिलता है।

यह पवित्र शास्त्र पहले पहल हमें यह बताता है कि 'परमेश्वर आत्मा है' (यूहन्ना 4:24)। 'आत्मा' याने देह रहित एवं माँस-हड्डी रहित 'जीवित व्यक्ति' - (लूका 24:39)। आत्मा को आप देख नहीं सकते, जैसे कि बिजली, - बिजली के द्वारा संचालित यन्त्रों एवं बल्ब के प्रकाश को तो हम देख पाते हैं किंतु वहीं बिजली की शक्ति जब तारों से प्रवाहित होती है तब हम उसे देख नहीं पाते। अत: इस 'अदृश्य बिजली शक्ति' से भी परमेश्वर अत्यंत ही शक्तिशाली है, और वह एक जीवित व्यक्ति है। उस ने मूसा से स्वयं ही कहा - 'मैं जो हूँ, सो हूँ' - (निर्गमन 3:14)। परमेश्वर के विषय में और भी कई बातें बाइबल हमें बताती है। यह हमें बताती है कि परमेश्वर सनातन है - (भजन सहिता 90:2)! अर्थात् वह आदि और अंत है! क्या इसे आपका मन या मस्तिष्क समझने पाता है? परमेश्वर न बदलनेवाला है - (मलाकी 3:6)! हमारे आनंद के दिनों में, दु:ख के दिनों में भी वह सदा एक समान रहता है। परमेश्वर सर्वशक्तिमान है - (उत्पत्ति 17:1)! वह अत्यंत ही सामर्थी है, अपना वचन वह पूरा करता एवं कर सकता है। वह सब कुछ जानता है - (यूहन्ना 21:17)। हमारे गुप्त विचारों के साथ साथ हमारे बारे में वह सब कुछ जानता है। वह हर जगह उपस्थित है - (यिर्मयाह 23:24)। वह पृथ्वी पर, स्वर्ग में भी फैला हुआ है। हम उस से छिप नहीं सकते। वह पवित्र है - (लैव्यव्यवस्था. 19:2)! कोई भी पापपूर्ण वस्तु उस के सन्मुख ठरह नहीं सकती। यह आवश्यक है कि हमारा पाप हम से निकाल दिया जाए। परमेश्वर विश्वासयोग्य है - (2 तीमुथियुस 2:13)! अपने वचन में विद्यमान अपनी प्रतिज्ञाओं को वह निश्चय ही पूरा करेगा। हम उस पर भरोसा रख सकते हैं। वह दयावान है - (भजन सहिता 145:9)! इसका तात्पर्य यह है कि जो लोग भलाई पाने के लिए अयोग्य हैं उन के प्रति भी वह भला ही बना रहता है। परमेश्वर प्रेम है - (1 यूहन्ना 4:8)! उस ने प्रेम में होकर हमारे लिए अपना एकलौता पुत्र दे दिया।

इसी ईश्वर ने त्रिएक परमेश्वर के रूप में स्वयं को हम पर प्रगट किया। त्रिएकता याने 'तीनों एक होना' अर्थात पिता और पुत्र और पवित्रआत्मा नामक तीन व्यक्तियों के रूप में परमेश्वर ने हम पर अपने आप को प्रगट किया (मत्ती 28:19)। सामर्थ एवं महिमा में ये तीनों ही एक बराबर हैं। 'पिता' स्वयं परमेश्वर है। 'पुत्र यीशु मसीह' परमेश्वर है। एवं 'पवित्रआत्मा' भी परमेश्वर है। तौभी ये तीनों तीन ईश्वर नहीं हैं, वरन् 'परमेश्वर एक ही है' - (व्यवस्थाविवरण 6:4)।

बाइबल में एक ऐसी घटना का वर्णन पाया जाता है जिस में इन तीनों ही ने एक ही समय में अपने को प्रगट किया था। मसीह के बपतिस्मा के दौरान यह हुआ - (मत्ती 3:13-17)। यहाँ पिता स्वर्ग से एक आवाज (आकाश वाणी) की तरह सुनाई पड़ा। पुत्र यीशु मसीह ने जहाँ बपतिस्मा देनेवाले यूहन्ना के हाथों बपतिस्मा लिया। वहीं पवित्र आत्मा एक कबूतर की नाईं यीशु पर उतर आया।

उपसंहार

समान बल एवं महिमा वाले तीन भिन्न व्यक्ति 'एक ही परमेश्वर' कैसे हैं, हम यह नहीं समझ सकते। तौभी यह सच है कि परमेश्वर हमारे मानवीय विचारों से कहीं परे एवं बढ़कर, या श्रेष्ठ है। इस तरह उसने स्वयं ही हम पर अपने आप को प्रगट किया। पिता ने अपने पुत्र को भेजा कि वह हमारा उद्धारकर्ता होवे। जहाँ पुत्र ने अपने दु:खों और मृत्यु के द्वारा हमें छुड़ाया, ठीक वहीं - यीशु ने जो कुछ हमारे वास्ते किया उन सब कार्यों को पवित्रआत्मा हम तक ले आया। अत: अपने सारे मन से इस वचन पर विश्वास करके अब हम उद्धार पा सकते है।

अभ्यास

अ. प्रश्नोत्तर :

प्र.13. 'परमेश्वर' क्या है या कौन है ?

यूहन्ना 4:24 - ''पमेश्वर 'आत्मा' है।''

लूका 24:39 - ''आत्मा के हड्डी नहीं होते और न उस का माँस होता है।''

उ. अत: परमेश्वर एक आत्मा है।

प्र.14. परमेश्वर कैसा है ?

भजन संहिता 90:2ब - ''अनादिकाल से अनंतकाल तक तू ही परमेश्वर है।''

उ.1. परमेश्वर अनंत है।

मलाकी 3:6 - 'मैं यहोवा' कभी बदलता नहीं।

उ.2. परमेश्वर कभी भी नहीं बदलता।

उत्पत्ति 17:1 - ''मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर हूँ।''

उ.3. परमेश्वर सर्वसामर्थी है।

यूहन्ना 21:17 - ''हे प्रभू, तू तो सब कुछ जानता है।''

उ.4. परमेश्वर सब कुछ जानता है।

यिर्मयाह 23:24 - यहोवा की यह वाणी है - ''क्या स्वर्ग और पृथ्वी दोनों मुझ से परिपूर्ण नहीं ?''

उ.5. परमेश्वर हर कहीं (सब स्थानों पर) उपस्थित है।

लैव्यव्यवस्था 19:2 – ''मैं तुम्हारा परमेश्वर 'यहोवा' पवित्र हूँ!''

उ.6. परमेश्वर पवित्र है।

2 तीमुथियुस 2:13 – 'वह' (अर्थात परमेश्वर) विश्वासयोग्य बना रहता है।

उ.7. परमेश्वर विश्वासयोग्य है।

प्र15. एकमात्र सच्चा परमेश्वर कौन है?

व्यवस्था विवरण 6:4 – ''परमेश्वर एक ही है।''

मत्ती 28:19 – ''इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हे पिता एवं पुत्र एवं पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।''

उ. एकमात्र सच्चा परमेश्वर 'त्रिएक परमेश्वर' है। (त्रिएक परमेश्वर याने एक ही परमेश्वर तीन भिन्न व्यक्तियों के रूप में विद्यमान रहता है – अर्थात पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा।)

मत्ती 3:13-17 पढ़िए :-

यहाँ मसीह के बपतिस्मा के समय, ईश्वरत्व के प्रत्येक व्यक्ति को एक विशेष रीति से हम पाते हैं।

नीचे की सूची में से सही जोड़े बनाइये, रेखा खींचकर कि किस व्यक्ति ने अपने आप को कैसे प्रगट किया –

'पिता परमेश्वर'	–	जिसे यूहन्ना ने बपतिस्मा दिया।
'पुत्र परमेश्वर'	–	एक कबूतर की नाईं उतर आया।
'पवित्र आत्मा परमेश्वर'	–	आकाशवाणी के रूप में जिसका स्वर सुनाई पड़ा।

ब. पाठ को लागू करना –

निम्नलिखित में से सही वाक्यों को पहिचानिये –

1. एक ही सच्चे परमेश्वर ने स्वयं को तीन भिन्न व्यक्तियों के रूप में प्रगट किया। ( )
2. ये तीनों व्यक्ति तीन भिन्न ईश्वर हैं। ( )
3. ये तीनों व्यक्ति सामर्थ्य में एक समान हैं। ( )
4. तौभी, यदि इन्हे क्रमबद्ध किया जाए, तो पहला पिता, फिर पुत्र, और फिर पवित्रआत्मा। ( )
5. इस एकमात्र सच्चे परमेश्वर को ही हम त्रिएक परमेश्वर कहा करते हैं। ( )

स. बाइबल पढ़िए –

निम्न लिखित वचन भाग हमें 'परमेश्वर' के विषय में कुछ जानकारी देते हैं। इन्हे पढ़िए –

भजन संहिता 90:2	यूहन्ना 21:17	2 तीमुतियुस 2:13
मलाकी 3:6	यिर्मयाह 23:24	भजन सहिता 145:9
उत्पत्ति 17:1	लैव्यव्यवस्था 19:2	1 यूहन्ना 4:8

द. इन में से कौन सी आयत –

1. हमें यह बताती है कि परमेश्वर सब कुछ जानता है ?
2. हमें यह बताती है कि परमेश्वर हर जगह रहता है ?

इ. कंठस्थ हेतु –

इन्हे मुखाग्र कीजिए –

'नया नियम' की पुस्तकें (कुल 27)

मत्ती र.सु.	रोमियों	कुलुस्सियों	इब्रानियों
मरकुस र.सु.	कुरिन्थियों (1 और 2)	थिस्सलुनीकियों (1 और 2)	याकूब
लूका र.सु.	गलातियों	तीमुथियुस (1 और 2)	पतरस (1 और 2)
यूहन्ना र.सु.	इफिसियों	तीतुस	यूहन्ना (1, 2 और 3)
प्रेरितों के काम	फिलिप्पियों	फिलेमोन	यहूदा एवं प्रकाशित वाक्य

पाठ - 4

संसार और मनुष्य

प्रार्थना : हमारे सृजनकार, हम सभों के लिए इस पृथ्वी, एवं स्वर्ग पर भी सब कुछ की रचना करनेवाले, सर्वशक्तिमान परमेश्वर, हमारे अनुग्रहकारी पिता, हमें आशीषित करते हुए 'सदा हमारी रक्षा रखवाली करनेवाले, आप के सामर्थ्य पर भरोसा रख पाने हेतु' हमें दृढ़ विश्वास प्रदान कीजिएगा। और जो कुछ भलाई आपने हमारी की, उन सारी भलाईयों हेतु आपकी स्तुति करने के लिए 'धन्यावाद से भरे मन' हमें प्रदान करें। आमीन।

पाठ

(उत्पत्ति 1 और 2 अध्याय) आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की। इस से पहले कुछ भी न था, न पेड़-पौधे थे, न पहाड़ थे, न वायु थी और न लोग ही थे। पहले दिन परमेश्वर ने कहा ''उजियाला हो'' और उजियाला हो गया। दूसरे दिन भी इसी प्रकार से ही परमेश्वर ने आकाश को बनाया। तीसरे दिन उस ने जल से सूखी जमीन को अलग कर दिया और उस जमीन पर घाँस, पौधों एवं वृक्षों को उगा दिया! चौंथे दिन परमेश्वर ने सूरज, चंद्रमा और तारों को सृजा। पाँचवें दिन उसने जल में जीवित रहनेवाले मछलियों एवं जानवरों और आकाश के पक्षियों को बनाया। छठवें दिन पृथ्वी पर जीवित रहनेवाले जानवरों एवं मनुष्यों को बनाया। परमेश्वर के द्वारा बनाया हुआ सब कुछ अच्छा था। फिर साँतवें दिन परमेश्वर ने विश्राम लेकर सारी सृष्टि को पवित्र किया।

परमेश्वर ने अपने वचन के सामर्थ्य से स्वर्ग और पृथ्वी पर सब कुछ बनाया। परमेश्वर ने कहा 'हो' और वैसा ही 'हो गया'। किंतु यों बनाने में भी जरा सा अन्तर है। अर्थात् कि - छठे दिन मनुष्य को बनाते समय जब यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को भूमि की मिट्टी से रचा, तब उस के नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया; और मनुष्य जीवित प्राणी बन गया। परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया। अर्थात् कि जब परमेश्वर ने मनुष्य को रचा तब मनुष्य पवित्र एवं पापरहित था। प्रथम मानव के रूप में परमेश्वर ने आदम को बनाया। फिर परमेश्वर ने यह देखकर कि आदम के पास उस से मेल खानेवाला सहायक नहीं है - उसे गहरी नींद में ड़ालकर उस की एक पसली निकालकर उसी पसली को परमेश्वर ने स्त्री बना दिया। और उस को आदम के पास ले आया। तब आदम ने उसे 'नारी' कहा। तब फिर परमेश्वर ने उन दोनों को अदन नामक एक सुन्दर वाटिका में रख दिया। और परमेश्वर ने उन को आशीष दी। और उन से कहा, ''फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उस को अपने वश में कर लो'' यह कहकर उसने उन्हे आशीष दी।

उस बगीचे के बीचों बीच परमेश्वर ने दो वृक्ष लगाए। एक था जीवन का वृक्ष और दूसरा भलेबुरे का ज्ञान देनेवाला वृक्ष। और परमेश्वर ने आदम-हव्वा को यह आज्ञा दी कि वे इस भले बुरे का ज्ञान देनेवाले वृक्ष का फल न खाएँ। और कहा कि यदि तुम खाओगे तो निश्चय ही मर जाओगे। आदम और हव्वा को परखने के लिए ही परमेश्वर ने यों किया। उस ने यह देखना चाहा कि वे उस की आज्ञा मानते भी हैं या नहीं।

अत: बाइबल हमें बताती है कि इस तरह कैसे एक सरल रीति से परमेश्वर ने सब कुछ की सृष्टि की, कि स्वर्ग और पृथ्वी पर की सारी वस्तुओं को उसने मात्र छ: दिनों में रच दिया (निमर्गमन 20:11) 'स्वर्ग पर की सारी वस्तुएँ' याने जिस में स्वर्गदूत भी शामिल हैं। इसी दौरान स्वर्गदूतों की भी रचना की गयी थी, किंतु बाइबल हमें स्पष्टता: नहीं बताती कि किस दिन। तौभी हमें यह मालूम है कि परमेश्वर के द्वारा बनायी गयी इसी सृष्टि में, एवं अन्यजातियों (या सांसारिक जातियों) के द्वारा पढ़ाये-सिखाये जानेवाली आदिम सृष्टि में कितना फर्क है। 'यह संसार करोड़ों वर्षों से यों ही समय दर समय विकास करता जा रहा है' कहकर आम तौर पर बताया जाता है। इस शिक्षा को ''जीव परिमाण सिद्धांत'' कहा जाता है। और यह सिद्धांत अक्सर यही कोशिश किया करता है कि हर एक प्रश्न का जवाब केवल वैज्ञानिक तर्क के आधार पर ही दिया जाए। किंतु

वास्तविकता यह है कि इस सिद्धांत की ज्यादात्तर शिक्षाएँ केवल अमान्य (अप्रामाणित) ही हैं। इस सिद्धांत का रूझाव तो केवल कई प्रकार की झूठी धारणाओं के प्रति ही रहता है। ''इस पृथ्वी पर आज कायम कोई भी 'पदार्थ मूल' कहाँ से आया या उत्पन्न हुआ?'' - इस प्रश्न का जवाब यह सिद्धांत कतई नहीं दे पाता।

जब बाइबल कहती है कि ''परमेश्वर ने स्वयं अपने ही स्वरूप में मनुष्य को बनाया'' तब ही वह स्पष्टता: यह बता देती है कि सारी सृष्टि के सब जीवों में से मनुष्य ही सर्वोच्च प्राणी है (उपत्ति 1:27)। परमेश्वर के ही स्वरूप में मनुष्य के रचे जाने का तात्पर्य यह नहीं कि वह ईश्वर के रूप-रंग के अनुसार ही रचा गया। वरन 'परमेश्वर का स्वरूप' याने 'संपूर्ण धार्मिकता एवं सच्ची पवित्रता' है। अर्थात ''मनुष्य 'सत्य की धार्मिकता एवं पवित्रता' में सृजा गया है'' कहकर पौलुस ने इस संबंध में शिक्षा दी - (इफिसियों 4:24)।

परमेश्वर ने सारे प्राणियों को ऐसे नहीं बनाया कि वे अपने ही बल पर जीवित रहें। वह ऐसा ईश्वर नहीं जो कि अपने हाथों की रचना या वस्तु को चाबी देकर यह देखता बैठे कि वह वस्तु अपने आप अब चल रही है। वरन् वह तो सारे प्राणियों की सदा देखभाल करता है। वरन् वह सब वस्तुओं को अपने सामर्थ्य के वचन से संभालता है - (इब्रानियों 1:3)। परमेश्वर के सहारे के बिना यह संसार एक क्षण भी चल-ठहर नहीं सकता। अत: हमारे शरीरों एवं जीवनों के लिए आवश्यक सब कुछ वह हमें प्रतिदिन प्रदान करता है। इसीलिए उस के प्रति आज्ञाकारिता एवं धन्यवादिता में हम सब ही उस के कर्जदार हैं (भजन सहिता 118:1)।

उपसंहार

सारी भलाइयों के दाता 'ईश्वर' की स्तुति कर !
सर्वईश्वर की स्तुति कर!
स्तुति कर स्वर्गीय सर्वोच्च की !
पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा की स्तुति कर!

अभ्यास

अ. प्रश्नोत्तर :

प्र.16. किसने सब कुछ बनाया?

नहेम्याह 9:6 - ''तू ही अकेला परमेश्वर है, स्वर्ग वरन् सब से ऊँचे स्वर्ग और उस के सब गण, और पृथ्वी और जो कुछ उस में है, सभों को तू ही ने बनाया।''

उ. परमेश्वर ने ही सब कुछ बनाया।

प्र.17. परमेश्वर ने कितने दिनों में सब कुछ बनाया?

निर्गमन 20:11 - ''छ: दिनों में परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उन में हैं सब को बनाया।''

उ. छ: दिनों में परमेश्वर ने सब कुछ बनाया।

प्र.18. परमेश्वर ने सब कुछ कैसे बनाया?

उत्पत्ति 2:7 - ''आकाश मण्डल और उस के सारे गण यहोवा के वचन से बने हैं।''

उ. अपने वचन से परमेश्वर ने सब कुछ बनाया।

प्र.19. किन्तु मनुष्य को परमेश्वर ने कैसे रचा ?

उत्पत्ति 2:7 – ''तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा, और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया, और आदम जीवित प्राणी बन गया।''

उ. मनुष्य को परमेश्वर ने भूमि की मिट्टी से और अपने श्वास से बनाया।

प्र.20. मनुष्य को परमेश्वर ने किसके स्वरूप में सृजा ?

उत्पत्ति 1:27 – ''परमेश्वर ने मनुष्य को स्वयं अपने स्वरूप में बनाया।''

उ. अपने ही स्वरूप में बनाया।

प्र.21. परमेश्वर का स्वरूप याने क्या होता है ?

इफिसियों 4:24 – ''नये मनुष्यत्व को पहिन लो, जो परमेश्वर के अनुरूप सत्य की धार्मिकता एवं पवित्रता में सृजा गया है।''

उ. परमेश्वर का स्वरूप याने उसकी धार्मिकता एवं पवित्रता ही है।

प्र.22. परमेश्वर ने आदम और हव्वा को क्या आशीष दी ?

उत्पत्ति 1:28 – परमेश्वर ने उन को आशीष देते हुए कहा – ''फूलो फलो और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो।''

उ. परमेश्वर ने उन्हे संतानोत्पत्ति की आशीष एवं उसकी सृष्टि पर प्रभुता करने की आशीष दी।

प्र.23. आज भी परमेश्वर किस प्रकार से आशीषें देकर सारी सृष्टि का संरक्षण करता है ?

इब्रानियों 1:3 – ''वह सब वस्तुओं को अपने सामर्थी वचन से संभालता है।''

उ. अपने सामर्थ्यपूर्ण वचन से ही परमेश्वर सारी आशीषें देता और सब कुछ की रक्षा करता है।

प्र.24. इस समस्त कार्य के कारण हम अपने स्वर्गीय पिता को बदले में क्या दे सकते हैं ?

भजन 118:1 – ''यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है, क्योंकि उसकी करूणा सदा की है।''

उ. हमें आज्ञाकारी बने रहकर उसे धन्यवाद देना है।

ब. पाठ को जानना (उत्पत्ति - अध्याय 9)

'छ: दिनों में परमेश्वर की बनायी हुई चीजों की' नीचे एक सूची दी गई है। जिन्हे पढ़कर सही जोड़े बनाइये (रेखाएँ खींचकर)

नदी और समुंदर	–	पहला दिन
सूरज–चंद्रमा और तारे	–	दूसरा दिन
पक्षी और मछलियाँ	–	तीसरा दिन
मनुष्य और जीवजन्तु	–	चौंथा दिन
उजियाला	–	पाँचवा दिन
आकाश	–	छठवा दिन

स. पाठ को लागू करना – (निम्नलिखित वाक्यों के सही उत्तर पहिचानिए)

1. 'परमेश्वर ने अपने ही स्वरूप में मनुष्य को बनाया' – जिसका तात्पर्य यह है कि –
   ( ) मनुष्य इसलिए बनाया गया ताकि वह देखने में बिलकुल परमेश्वर जैसा ही लगे।
   ( ) मनुष्य 'पवित्र' एवं 'पाप रहित' बनाया गया।
2. परमेश्वर ने मनुष्य को यह आज्ञा दी कि वह भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाए, क्यों कि –
   ( ) उसने मनुष्य की आज्ञाकारिता को जाँचना चाहा।
   ( ) उसने मनुष्य के विषय में यह चाहा कि वह तुच्छ प्राणी बन जाए
3. आज भी परमेश्वर हमें भोजन और कपड़े देता है, क्यों कि –
   ( ) हम स्वयं भी उन्हे पाने के लिए मेहनत करते हैं।
   ( ) हम अच्छे या भले लोग हैं इसलिए ही।
   ( ) वह एक प्रेमी एवं अनुग्रहकारी परमेश्वर है इसलिए!
4. परमेश्वर चाहता है कि हम उसके दिए हुए आशीषों के लिए उसे धन्यवाद दें –
   ( ) प्रतिदिन (अपने दैनिक जीवनो में)!
   ( ) जब हमारा मन करे, केवल तब ही।

द. बाइबल पढ़िए –

निम्न लिखित में से उस आयत को पहिचानिए और उसे रेखांकित कीजिए जो हमें यह बताती है कि 'आज भी परमेश्वर सारी सृष्टि की देखभाल करता है।'

उत्पत्ति 2:17 इब्रनियों 1:3 उत्पत्ति 1:21 निर्गमन 20:11

इ. कॅटाकिज़्म (लूथर की प्रश्नोत्तरी) सीखिए –

विश्वास वचन का प्रथम भाग –

मैं विश्वास करता हूँ स्वर्ग और पृथ्वी के सृजनहार, सर्व शक्तिमान पिता परमेश्वर पर!

इसका क्या अर्थ है?

मैं यह विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर ने ही मनुष्य एवं सारी सृष्टि को रचा, और उसी ने मुझे मेरी देह, बुद्धि एवं सभी योग्यताएँ तथा मेरे सब अंग दिए।